इँजत

(पंचपरगनिया उपन्यास)

राजकिशोर सिंह

प्रकाशक
पंचपरगनिया भाषा विकास केन्द्रीय समिति
बुण्डू (राँची)

इँजत

(पंचपरगनिया उपन्यास)

लिख'इआ	:	राजकिशोर सिंह
छापुवाइआ	:	नरेन्द्रजीत सिंह आर अम्बिका स्वाँसी
सउब अधिकार	:	लिख'इआक ठीने
परथम संसकरन	:	अप्रैल २४, २०१२
मुद्रण	:	सुमुद्रण, राँची
परकासन	:	पंचपरगनिया भाषा विकास केन्द्रीय समिति बुण्डू , राँची (झारखण्ड)
दाम	:	100 टाका

दुम काथा.....

जतना टा सुख आपन भासाक सेबा करेक मेहेन लागेला अतना टा सुख आर' कन' कामे नाइ पावायला.....इटा मयँ किताप रचना करेक खने बुझे पारलँ'। इटाक लाभ आपन तेहें नाइ बरंग लकेक तेहें देखल जायला। आर मर मन खुसिये नाइच उठेला जे चला इ देह' टा कन' बेस कामे त लागलक।

पंचपरगनिया पढ़ायेक तेहें किताप केर अभाब सभे दिन आहे, पयसाक अभाबे नावा–नावा किताप छापुवाना एकटा बड़े समइसा हय जाय आहे। ढेर बिसइये एखन' कन' किताप नाइ पावायला जेटाक तेहें पढुआ छुआ सउब केर तेहें कठीन इसथीति हय जायला। ढेइर रकम बिधा मेहेन एखन' किताप केर कमी आहे। इ समइसा गिला मर मन के हिलाय देला मंतुक का करँ' पयसाक अभाबे कन' करे नी पारायला। तबु साहास कइर के मयँ दूइ–चाइर टा किताप आपन पाँचपरगना बासी सउब केर पासे राखेक चेसटा कइर आहँ। सँगे–सँगे इटा केर' पूरा खेआल राइख आहँ' जे कम से कम उ बिसई गिला के छुअल जाउक जेगला एखन' अछुता आहे निमुदे.....आधुनिक समसामयिक कबिता, निबंध, माहाकाइब आर उपइनास एमान–एमान.....। जे भी उपाइये हउक इ किताप गिलाक रचना के मयँ पूरा कइर आहँ आर मने आसा आहे जे पंचपरगनिया पढुआ सउब केर तेहें इ किताप गिला ढेइर ठेभा देई।

"इँजत" पंचपरगनियाक इ उपइनास टा लकेक माझे आसाक दूरा खली। अंध–बिसवास, सामाजिक, सांसकीरितिक हींआक रहन–सहन गिला के बाँइध के चलेक चेसटा आहे। इटाउ खेआल राखेक चेसटा करल जाय आहे जे उपइनास टाय गाँवेक महक मिलते रहूक।

हय पारे किछु लक के बेस नाइ बुझाई काहे न काहूँ–काहूँ अंधबिसवास आर बिना मतलबेक थपल परथा गिलाक चरचाउ मयँ कइर

आहँ' इगला के जदि बेस भाबे परखल जाइ त आइज केर समइये बहुत बेस हई आर मानुस मान के नावा डहर देखाई सँगे–सँगे सभेक मने एकटा इँजत देखाई।

आघुबेटेउ चेसटा रही जे आर' किछु सेबा देल जाउक तबे भगमान भरसाय आसा राइख आहँ'।

जदि इ उपइनास टा थड़ेक' पढुआ भाई सउब के मदद दे पारि हले मयँ आपन मेहनइत टाके सफल बुझमूं ।

आर' एकटा काथा आहे – लिखल उपइनासे जतिक घटनाक चरचा आहे उगला केबल मर कलपना हेके आर एखनुक सामयिक घटना गिला के बाँधेक चेसटा करल जाय आहे.....

गाँवेक नाम गिला सत हेके मिंतुक घटना गिला मातर' मनेक सँच आर कालपनिक हेके। घटल घटना गिला कलपना रहलउ सँत केर बहुत पासे आहे तबे पढ़इआ सउब इगला के दसर रूपे ना लेब।

रउर केर सालहाक आसाय.....

सरहुल परब
2012

राजकिशोर सिंह

परिचय

नाम	:	राजकिशोर सिंह
पिता	:	स्व. राधागोविन्द सिंह
माता	:	स्व. राधारानी सिंह
जन्म तिथि	:	तेरह अक्टूबर उन्नीस सौ छप्पन (13.10.1956)
स्थाई पता	:	अस्पताल टोली ग्राम – बुण्डू, पो.– बुण्डू प्रखण्ड – बुण्डू, अनुमण्डल–बुण्डू जिला – राँची (झारखण्ड)
शैक्षणिक योग्यता	:	इंटरमीडिएट (आई.ए.)
रचना विधा	:	कहानी, कविता, नाटक, उपन्यास, निबंध (पंचपरगनिया भाषा में)
प्रकाशन	:	मैट्रीक से लेकर पी.जी. तक के पुस्तकों में निबंध लेख कहानी कविता इत्यादि। विभिन्न पत्रिकाओं में भी रचनाओं का प्रकाशन के लिए।
तैयार पाण्डुलिपि	:	1). इँजत (पंचपरगनिया उपन्यास 2). तुलसी चउरा (पंचपरगनिया निबंध) सिबु बारात महाकाव्य (पंचपरगनिया)
संगीत विधा	:	विभिन्न प्रकार के पंचपरगनिया लोक संगीत एवं आधुनिक पंचपरगनिया संगीत को आकाशवाणी के माध्यम से प्रसारण करना तथा लोगों में पारम्परिकता को बनाए रखना।
सम्प्रति	:	लोकसाहित्य और लोक संस्कृति के उत्थान के लिए पंचपरगनिया साहित्य और संगीत के सृजनात्मक कार्य में समर्पित। साथ ही पंचपरगनिया के पारंपरिक लोक गीतों के स्वरों को सुरक्षित रखने के लिए उनको सही स्वर लिपिबद्ध करना।
सम्पर्क	:	9570021694 (M) 9234104187 (H)